ILLUSTRATED SCRIPTURE STORIES, IV.

The Life and Works of St. Paul.

सचित्र धार्मिक कथाएं—४

महात्मा पावल का जीवन वृत्तान्त

लेखक

प्रभु सेवक यूनस सिंह—अल्मोड़ा,

PUBLISHED BY

The North India Christian Tract & Book Society

ALLAHABAD.

1st Edition. 1,000 copies.

1921

Price 4 annas.
दाम ४ आना

भूमिका।

जिस प्रकार राज्यनैतिक संसार में बड़े बड़े सूरमा और महावीरों और राज्यनैतिज्ञों का नाम प्रसिद्ध है उसी प्रकार धार्मिक संसार में महात्मा पावल का नाम सब में बढ़ा चढ़ा है. भारत के प्रसिद्ध सुधारक शंकराचार्य्य और यूरोप के प्रसिद्ध सुधारक मार्टीन लूथर के संग भी महात्मा पावल की तुलना नहीं हो सकती है. हमारे प्रभु जी के स्वर्गारूढ़ होने के पीछे यदि कोई ऐसा पुरुष हुआ हो जिस ने अपने गुरू महाराज को वैसा ही जाना और पहिचाना हो जैसा कि चाहिये था तो न तो हम महात्मा पितर और न महात्मा योहन को ही यह स्थान देंगे, यद्यपि ये दोनों सज्जन अपने गुरू जी के संग ही क्यों न रहे थे परन्तु यह आदर केवल महात्मा पावल को ही दिया जा सकता है जिन की जीवनी का संक्षेप वर्णन केवल आठ कथाओं में आपके सन्मुख रखा जाता है।

महात्मा पावल एक विद्वान और अपने समय के माने हुए पुरुषों में से थे. न केवल इस लिये ही हम उन्हें विद्वान कहते हैं कि वे गमालियेल नाम प्रसिद्ध यहूदी पण्डित के शिष्य रहे परन्तु इस लिये कि उन के लेख जो पत्रियों के रूप में हम तक पहुंचे उनके ज्ञान और बुद्धि के भेद को दर्शाते हैं. सुसमाचार अर्थात् इञ्जील का मुख्य भाग उन्हीं की पत्रियों से ही सुसज्जित है।

प्रभु खीष्ट के शिष्य होने के पीछे जो प्रेम उन्हों ने अपने

गुरूजी के लिये प्रकट किया वह अद्वितीय है. भक्त होने के दिन से ही उन्हों ने अपने को पूर्ण रूप से अपने गुरू जी को सौंप दिया और अपने को अपना न समझ कर अपना सर्वस्व उनके चर्णों पर रख कर प्रेम की भेंट कर दिया।

फिर यह गुण भी आप में वर्त्तमान था कि वे सब मनुष्यों से भी वैसा ही प्रेम रखते थे जैसा वे अपने से रखते थे. यह प्रेम दिन प्रति दिन बढ़ता जाता था और अन्त को यहां लों बढ़ गया कि वे यह कहने को विवश हो गये कि "किस के दुःख से मैं दुःखी नहीं होता" इसी प्रकर कितने स्थानों में उन के प्रेम का अद्भुत वर्णन मिलता है.

परमेश्वर पर अटल विश्वास भी महात्मा जी के बड़े गुणों में से एक है किसी का कहना सत्य है कि यदि प्रेम ख्रीष्टीय जीवन में फल समझा जाए तो विश्वास को उस की जड़ कहना अनुचित न होगा, पावल के प्रेम की जड़ ही उस का विश्वास है. पावल का विश्वास यहां लों था कि उन्हों ने अपने एक पत्र में यह भी लिखा कि "जो मुझे बल देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं।"

महात्मा पावल के साम्हने एक उच्च आदर्श था और जब तक मृत्यु ने उन का संसारिक जीवन कार्य समाप्त न किया वे उस उच्च आदर्श के लिये ही जीवित रहे और प्रभु ख्रीष्ट महाराज को प्रसन्न करना और उन्हें जिन्हों ने अब तक प्रभु जी को न माना और न जाना उन को प्रभु जी के विषय में ज्ञान पहुंचाना ही उन के जीवन का सब से बड़ा काम ठहरा।

समय व स्थान की घटी से हम महात्मा जी की बीरता और सच्चाई व खराई का विस्तार पूर्वक बर्णन नहीं कर सके; परन्तु यह दो गुण भी महात्मा जी के जीवन में ऐसे ही वर्त्तमान थे जैसे कि प्रेम व विश्वास थे परन्तु यहां पर यह दिखा देना अवश्य जानते हैं सब से बड़े ज्ञानी और विद्वान होने पर भी महात्मा जी में दीनताई कूट कूट कर भरी थी. जब उन्होंने प्रभुजी के सन्तों का बर्णन किया तब अपने को सब से छोटा बल्कि सन्त कहाने के योग्य भी नहीं कहा, एक दूसरे स्थान में उन्हों ने प्रभु जी के भक्तों की चर्चा करते हुए अपने को सब से छोटे से छोटे भक्त से भी छोटा कहा. परन्तु जब वे इस बात का बर्णन कर रहे थे कि प्रभु जी के द्वारा क्योंकर पापी त्राण पाते हैं तो अपने को ही सब से बड़ा पापी कहा.

महात्मा जी के इस अपूर्व जीवन में प्रार्थना का जो स्थान है वह अतुल्य है. प्रार्थना ही उनके जीवन की कुञ्जी कही जा सकती है.' 'नित्य प्रार्थना करने" की शिक्षा का यदि कोई दृष्टान्त मिल सकता है तो वह महात्मा जी की जीवनी में ही मिलेगा।

पावल के जीवन में एक और बात जो हमारा ध्यान अपनी ओर खींचती है सो वह सेवा का जीवन है. वह परिश्रम करने में कभी नहीं शरमाए. अपने हाथों से परिश्रम करके उन्हों ने अपना पालन पोषण किया और समय निकाल कर प्रभु जी की सेवा में लग गये।

प्रभु जी के जीवन को छोड़ महात्मा पावल का जीवन ही

हमारे लिये शिक्षाप्रद है. यदि हम प्रभु जी का अनुक्रमण करने से घबराते हैं तो महात्मा जी हमें शान्ति देते हैं हम सब महात्मा जी के नमूने पर चल कर अवश्य ही अपने प्रभु के नमूने पर चलने के योग्य हो सकेंगे।

इस ग्रंथमाला में ४ पुस्तकें हैं पहिली तीन पुस्तकों में प्रभु ख्रीष्ट महाराज और उन के मित्रों की चर्चा है प्रत्येक ग्रंथ में ८ रंगीन चित्र हैं जिन्हें इंगलेन्ड के प्रसिद्ध चित्रकार हेरल्ड कौपिंग साहिब ने बनाया है आशा है कि पाठकगण इन सचित्र ग्रंथों से लाभ उठाएंगे।

अलमोड़ा
२३ मई १९२१.

बिनीत
यूनस सिंह



महात्मा पावल प्रेरित का जीवन वृत्तान्त.

१.

महात्मा पावल और स्तिफान की मृत्यु.

हम कह नहीं सकते कि जिस समय जगत गुरू यीशु मसीह जी ने सारे संसार के उद्धार के लिये अपना प्राण निछावर किया उस समय महात्मा पावल जो पहिले शावल नाम से प्रसिद्ध था अपनी जन्मभूमि तरसुस में था अथवा कहीं किसी और स्थान में था. परन्तु जिस समय यीशु मसीह जी के चेलों ने अपने गुरू की मृत्यु और उन के जी उठने की कथा का प्रचार किया और यरूशलीम नगर मानो कि उन की शिक्षा से भर गया उस समय नवयुवक शावल इस पवित्र नगर की गलियों में घूमता फिरता और वृद्ध पण्डित गमालियेल के चरणों पर झुक कर प्रणाम करता हुआ दिखाई देता है.

नगर की दशा बिल्कुल बदली हुई है उस के उस समय के साथियों में से जो उस के साथ गमालियेल के चरणों पर बैठ कर शिक्षा पाते थे कितने गर्म दल के नेताओं के साथ मिल कर नगर में धूम मचा रहे हैं. पावल उन से मिलता है और वे मानो यह कहते हुए उस के निकट आते हैं: भाई शावल क्या कहें हम तो समझे

थे कि जब वह धोक्खेबाज यीशु नासरी क्रूश पर चढ़ाया गया तो ये सारे बवाल मर मिटेंगे और वे गलीली मच्छुवे भी फिर अपनी जाल संभाल लेंगे परन्तु अब तो ये दुष्ट मन्दिर में आ कर ही कहते हैं कि वह मर कर जी उठा है और कि···ईश्वर क्षमा करे··· परमात्मा ने अपना आत्मा हमें दिया है, और बुरा तो यह है कि कितनों ने क्या सैकड़ों ने उन की बात पर बिश्वास भी कर लिया है, कोई कोई प्रोहित भी तो उन में जा मिले हैं. कुछ दिन हुए कि महायाजक ने पितर और योहन को पकड़ कर धमकाया भी था कि वे इस नाम से फिर किसी से बात न करें परन्तु वे कब किसी की मानते हैं. वे बड़े साहसी हैं.

शावल बड़े आश्चर्य्य से यहां लों सुनता रहा और फिर बोला और कुछ !

वही युवक—और कुछ क्या वे दुष्ट इसी नासरी के नाम से बड़े अद्भुत काम कर रहे हैं कोई कोई तो कह रहे हैं कि वे अपने गुरू के समान बड़े बड़े आश्चर्य्य कर्म भी दिखा रहे हैं. पितर को बन्दी-गृह में बन्द भी किया परन्तु न जाने किस हिकमत से वह उस में से भाग गया. द्वार बन्द ही रहे परन्तु वह निकल गया.

अभी वह युवक शावल को यह सुना ही रहा था कि किसी ने आ कर ख़बर दी कि वह फिर पकड़ा गया है और महायाजक के साम्हने है. ये सब के सब वहां जा पहुंचे. शावल उस कमेटी का मेम्बर था. उसे तुरन्त अच्छा स्थान मिल गया.

महायाजक—देखो क्या हम ने तुम्हें दृढ़ आज्ञा न दी कि इस नाम से उपदेश मत करो. तौभी देखो तुम ने यरूशलेम को अपने

उपदेश से भर दिया है और इस मनुष्य का लहू हम पर लाना चाहते हो.

पितर—सत्य है परन्तु मनुष्यों की आज्ञा से अधिक ईश्वर की आज्ञा को मानना उचित है.

फिर कुछ समय लों आपस में बहस होती रही कोई कुछ सलाह देता था कोई कुछ. तब महायाजक ने गमालियेल से पूछा कहिये आप की क्या राय है? यह वृद्ध पण्डित कुछ सोच कर बोला अच्छा पितर और उस के संगियों को बाहर कर दो. वे तुरन्त बाहर कर दिये गये और तब वह बोला :—

हां तुम जो चाहो इन लोगों से कर सकते हो परन्तु मेरी सलाह है कि तुम इन लोगों से हाथ उठाओ और उन्हें जाने दो क्योंकि यह बिचार अथवा यह काम यदि मनुष्यों की ओर से होय तो लोप हो जायगा परन्तु यदि ईश्वर से है तो तुम उसे लोप नहीं कर सकते हो. ऐसा न हो कि तुम ईश्वर से भी लड़नेहारे ठहरो.

तब उन्हों ने यह सलाह मान ली और प्रेरितों को बुला कर उन्हें कोड़े मारके आज्ञा दी कि यीशु के नाम से बात मत करो. तब उन्हें छोड़ दिया. परन्तु वे इस से बहुत प्रसन्न हुए कि हम अपने गुरू जी के नाम के लिये निन्दित होने के योग्य गिने गये परन्तु उपदेश करने से नहीं थंभे.

जिस समय प्रेरितों पर यह फैसला हुआ उस समय शावल मन ही मन में सोचता था कि यह मान गये तो भला है नहीं तो मैं उन्हें ठीक करूंगा. परन्तु दूसरे ही दिन उस ने क्या देखा कि वे

फिर मन्दिर में प्रचार कर रहे हैं और बहुत लोग उन की सुन रहे हैं. इन उपदेशकों में स्तिफान नाम एक सेवक भी था. कुछ यहूदी पण्डित उस से बहस करने बैठ गये. सो जब वे उसे हरा न सके तो उन्हों ने महायाजक को ख़बर दी कि यहां स्तिफान नाम नासरी का चेला लोगों को सिखा रहा है कि योशु नासरी इस पवित्र स्थान को नष्ट कर देगा और कि मूसा की व्यवस्था को उलट कर सारी रीतियां उठा देगा.

यहूदी महा सभा से स्तिफान की गिरिफ्तारी की आज्ञा निकली और वह महा सभा में पहुंचाया गया.

महा सभा में शावल भी बैठा और स्तिफान साम्हने खड़ा किया गया. गवाहों ने फिर वही गवाही दी और तब महायाजक ने उस से प्रश्न किये. स्तिफान तनिक भी न घबराया बल्कि सभा के सब लोगों ने जब उस के मुंह को देखा तो वह स्वर्ग दूत के मुंह के समान चमक रहा था।

स्तिफान ने पितरों की लम्बी कथा सुनाई और दिखाया कि क्योंकर ईश्वर ने उन के द्वारा अपनी इच्छा पूरी की और कि पथरों का मन्दिर ईश्वर के रहने योग्य स्थान नहीं है और कि तुम व्यवस्था की बड़ाई तो करते हो परन्तु उसे पालन न करके भविष्य-द्वक्ताओं को सताते और मार डालते हो. इत्यादि यह बात सुनने से उन के मन को तीर सा लगा और वे स्तिफान पर दांत पीसने लगे. परन्तु उस ने पवित्रात्मा से परिपूर्ण हो स्वर्ग की ओर ताक के ईश्वर की महिमा को और यीशु को ईश्वर की दहिनी ओर खड़े देखा. और कहा देखो मैं स्वर्ग को खुले



और मनुष्य के पुत्र को ईश्वर की दहिनी ओर खड़े देखता हूं. तब उन्हों ने बड़े शब्द से चिल्ला के अपने कान बन्द किये और एक-चित्त हो कर उस पर लपके और उसे नगर के बाहर निकालके पत्थरवाह करने लगे और साक्षियों ने अपने कपड़े शावल नाम एक जवान के पावों पास उतार रखे—यह वही शावल है जो पीछे सन्त पावल व महात्मा पावल हो गया—

लोगों ने स्तिफान को पत्थरवाह किया जो यह कह के प्रार्थना करता था कि हे प्रभु योशु मेरे आत्मा को ग्रहण कर और घुटने टेक के उस ने बड़े शब्द से पुकारा हे प्रभु यह पाप उन पर मत लगाइये और यह कह के सो गया. भक्त लोगों ने स्तिफान को कबर में रखा और उस के लिये बड़ा बिलाप किया. सो स्तिफान ने पहिला विश्वासयोग्य साक्षी हो कर अपने गुरू तथा प्रभु योशु मसीह के लिये अपने प्राण चढ़ाये.

२.

महात्मा पावल का दिमिश्क नगर में प्रवेश करना.

पत्थरवाह करनेहारों ने अपने अपने हाथों की गर्द झाड़ कर शावल के पावों पर से अपने अपने कपड़े उठाए. उन्हों ने जगत गुरू के चेले को घात किया परन्तु क्या वे अपने कर्म के लिये कुछ शोकित हैं कदापि नहीं पावल जो उस समय शावल नाम से ही कहलाता था बार बार इस पर सोचता होगा और यह जान कर कि व्यवस्था

के अनुसार ऐसे मनुष्यों का यही अन्त होना चाहिये अपने मन को शान्ति देता होगा .

इस के पीछे वे नगर को फिरे, शावल लोगों को मसीही भक्तों को खोजने और उन्हें नष्ट करने के लिये भड़काता हुआ आगे आगे चला और घर घर घुसके पुरुषों और स्त्रियों को पकड़ के बन्दीगृह में डालने लगा. उस समय यिरूशलीम की मंडली पर बड़ा उपद्रव हुआ और प्रेरितों को छोड़ सब मसीही यहूदिया और शोमिरोन देश में तितर बितर हो गये. परन्तु जो तितर बितर हुए वे सुसमाचार प्रचार करते हुए फिरा किये ।

इन उपद्रव मचाने वालों का अगुवा शावल था और जब उस ने देखा कि क्योंकर यिरूशलीम नगर में मसीहियों की संख्या कम हो गई है तो उस के मन में और और बिचार उत्पन्न होने लगे. उस की दुष्टता का समाचार दूर दूर नगरों में फैल गया.

एक दिन शावल महायाजक से मिलने गया और जब उस कपटी बृद्ध महायाजक ने देखा कि यह युवक क्योंकर उत्तर की ओर जा कर मसीहियों को मिटाना चाहता है तो वह आनन्द से भर गया. शावल एक दम उत्तर के राज्यनगर दिमिशक़ को जाना चाहता था क्योंकि उस का बिचार था कि यदि यिरूशलीम और दिमिशक जैसे नगरों में इस नये धर्म को स्थान न मिलेगा तो यह एक दम नष्ट हो जायेगा. सो महायाजक ने मन्त्री से तुरन्त इस मज़मून का पत्र लिखवा दिया कि शावल को आज्ञा है कि यदि दिमिशक नगर में कोई मसीही हो तो वह उन्हें बांध कर यिरूश-

लीम नगर में ले आये. आज्ञा-पत्र पाते ही शावल ने चलने की तैयारी की .

शावल को तो प्रभु के शिष्यों को धमकाने और घात करने की सांस फूल रही थी सो उस ने भला पीछे क्यों देखना था वह एकचित्त हो आगे देखता हुआ बढ़ता गया. मार्ग में कई दिन लगे और वह कई मनोहर स्थानों से हो कर निकला जो प्राचीन इतिहासिक घटनाओं का परिचय देते थे परन्तु कोई दृश्य उस के अटल बिचारों को पलट न सका. यात्रा की अन्तिम घड़ी आ गई. सूर्य बड़े ताप से चमक रहा था जिस की ज्योति दिमिश्क नगर की ऊंची ऊंची मीनारों को चमका कर यात्रियों के मन को हर रही थी. नगर के सब लोग छाया में बैठ विश्राम कर रहे होंगे परन्तु शावल तो अपनी धुन में था उसे विश्राम से क्या ! वह तो सोच रहा होगा कि अब नगर में गया और अब मैंने मसीहियों को बांधा कि इतने में एक ऐसी घटना हुई कि जिस ने न केवल शावल के परन्तु सारे संसार के इतिहास में नया रंग चढ़ा दिया .

शावल चला जा रहा था कि अचांचक स्वर्ग से एक ज्योति उस की चारों ओर चमकी और वह भूमि पर गिर पड़ा और उस ने एक शब्द सुना जो उस से कहता था, हे शावल, हे शावल तू मुझे क्यों सताता है ।

शावल—हे प्रभु आप कौन हैं ?

उत्तर—प्रभु ने कहा मैं यीशु हूं जिसे तू सताता है. पैनों पर लात मारना तेरे लिये कठिन है.

शावल ने कंपित और अचंभित हो कहा हे प्रभु आप क्या चाहते हैं कि मैं करूं ?

प्रभु ने उस से कहा उठ के नगर में जा औ जो तुझे करना उचित है तुझे कहा जायेगा .

जो मनुष्य उस के संग थे वे चुप खड़े रहे क्योंकि वे शब्द तो सुनते थे परन्तु किसी को देखते न थे तब शावल भूमि से उठा परन्तु जब उस ने अपनी आंखें खोलीं तब किसी को देख न सका. जब साथी लोगों ने उस की दशा देखी तब वे उस का हाथ पकड़ के नगर में ले गये. सो शावल तीन दिन लों एक कोठरी में छिपा रहा वह न देख सकता था और न खाता था और न पीता था .

जिस समय शावल ने ईश्वर का तेज जो यीशु मसीह के मुंह पर है देखा उस समय से न जाने उस के मन में क्या क्या विचार उत्पन्न न हुए होंगे. कितनी बार वह अपने आप प्रश्न करता होगा कि क्या सचमुच जगत गुरू यीशु मसीह जी जीवते हैं क्या उन्हों ने मुझे जो कट्टर फरीशी हूं अपना बना लिया है, क्या यह आज्ञा-पत्र अब किसी काम का नहीं है, क्या शावल आगे को उन्हीं नासरी नाथ यीशु मसीह जी का सुसमाचार प्रचार करेगा ! क्या सम्भव नहीं कि जब उस की. शारीरिक आंखें बिलकुल बंद हैं उस की आत्मिक आंखों में ज्योति आती जाती है और वह मानों कि स्वप्न में स्तिफान को देख रहा है कि क्योंकर उस का मुंह स्वर्ग दूत के समान चमक रहा है फिर वह उसे यह कहते सुन रहा है हे प्रभु यीशु मेरी आत्मा को ग्रहण कीजिये. सब लोग उसे अंधा

देख कर आश्चर्य कर रहे हैं परन्तु सत्य तो यह है कि वह अब पहली बार देख रहा है .

क्या हम यह नहीं सोच सकते हैं कि इस समय शावल जगत गुरू यीशु मसीह जी को फिर से अपने साम्हने देख रहा है वह मानो फिर से उन की आवाज़ सुन रहा है और क्योंकर अपना सब कुछ उन्हें अर्पण कर रहा है. दर्शन देखने के पीछे यह तीसरा दिन है और शावल अब लों उस अंध्यारे कमरे में भूमि पर पड़ा हुआ है कि इतने में वह क्या पाता है कि कोई अनजाना मनुष्य उस के सिर पर अपना हाथ रख रहा है और उस ने कहा हे भाई शावल प्रभु जी अर्थात यीशु जी ने जिन्हों ने मार्ग में जिस से तुम आये थे तुम को दर्शन दिया मुझे भेजा है कि तुम दृष्टि पाओ और पवित्र आत्मा से भर जाओ .

इन अद्भुत बचनों के कहने के पीछे शावल की आंखों से छिलके से गिर पड़े और वह तुरन्त देखने लगा और क्या देखता है कि अनानियाह नामे एक यहूदी जो अब प्रभु जी का चेला है उस के साम्हने खड़ा है. सो वह फिर बोला भाई शावल आगे को तुम अन्य देशियों और राजाओं और इस्रायेल के सन्तानों के आगे प्रभु जी के नाम पहुँचाने को उन के चुने हुए पात्र हो और कि उन के नाम से तुम्हें बड़ा दु:ख उठाना होगा. शावल ने जब यह अद्भुत बचन सुना तो उसे कोई आश्चर्य न हुआ क्योंकि वह गुरू जी को पहिचान गया था और कि यह सम्भव था कि वे अपने किसी चेले व दूत के द्वारा इस दर्शन के भेद को उस पर खोलें .

शावल तुरन्त गुरू जी की आज्ञा मानने को तैयार हो गया उस ने गुरूजी के नाम पर बपतिस्मा अर्थात जल-संस्कार लिया और तिस के पीछे भोजन करके बल पाया .

३.

महात्मा पावल का दिमिश्कनगर से भाग निकलना.

जब शावल को प्रतीत हो गई कि वह दर्शन जगत गुरू यीशु मसीह ने इस लिये दिया कि मैं आगे को प्रभु का सेवक होकर रहूं तो वह दिमिश्क नगर के मसीह के चेलों में जा मिला. पहिले तो वे उस के नाम से डरते थे परन्तु अब उन्हें प्रतीत हो गई कि वह भी प्रभु का भक्त और सेवक हो गया है. क्योंकि जब कोई मनुष्य सच्चे मन से प्रभु का सेवक हो जाता है तो वह यही चाहता है कि वह आनन्द और शान्ति जो उस ने पाई है दूसरे भी जानें. उसे जो कोई मिलता है वह यह कहता है देखो परमात्मा ने मुझ पर कैसा अनुग्रह किया है, तुम भी उस के प्रेम को मान लो. शावल ने भी यही किया क्योंकि लिखा है कि "वह तुरन्त सभाओं में यीशु मसीह जी की कथा सुनाने लगा कि वे ईश्वर के पुत्र हैं"

जब लोगों ने देखा कि शावल जो यहां इसलिये आया था कि यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना करनेहारों को बांध कर



महायाजक के आगे पहुंचावे अब आप ही उस के चेलों में मिल गया तो वे बिस्मित हुए .

शावल तो प्रभु का चेला हो गया था उस ने उन्हें देख लिया था और अब उसे बिश्वास हो गया था कि वे मृतकों में से जी उठे हैं और अब जीवते हैं, कि वे ही यहूदियों के आशा के मसीह और जगत के त्राणकर्त्ता हैं और कि धर्मी ठहरने का केवल एक मार्ग है अर्थात यीशु मसीह जी के नाम पर बिश्वास करना और यह भी कि अब मैं अन्यदेशियों को भी इस सुसमाचार सुनाने के लिये चुना गया हूं तब भी उस ने सोचा कि कुछ समय एकान्त में ईश्वर की संगत में रहना उचित है ताकि अपने बिश्वास को और भी दृढ़ करले. सो वह तुरन्त दिमिश्क को छोड़ अरब देश को चला गया. और तीन बर्ष लों गुरू जी से ही सीखता रहा.

अरब देश से लौट आने के पीछे शावल फिर दिमिश्क नगर में आया इस नगर के मसीही उसे जान गये थे सो उसे यही भला लगा कि पहिले उन से मिले और अपनी सेवा को आरम्भ करे. सो वह प्रमाण दे दे कर दिमिश्क के रहनेहारे यहूदियों को ब्याकुल करने लगा कि यीशु नासरी जी ही जगत गुरू और जगत्राता हैं. जब बहुत दिन हो गये और कितने यहूदी प्रभु यीशु मसीह जी के शिष्यों में आ मिले तब यहूदियों ने उसे मार डालने का बिचार किया. और नगर के हाकिम को जो अरब देश के राजा अरीतास के ओर से ठहराया हुआ था कह कर नगर के द्वारों और फाटकों पर रात दिन पहरा बिठा दिया कि शावल

किसी तरह भाग न सके. उनकी कुमंत्रणा का पता शावल को लग गया.

जब प्रभु के भक्तों ने यह सुना तो वे बहुत घबरा गये और पावल के लिये प्रार्थना करने लगे. एक मसीही भाई का घर नगर की भीत से लगा हुआ था सो शिष्यों ने यह युक्ति निकाली कि शावल उस के घर की खिड़की से नीचे उतर कर भाग जाय. सो जब गहरा अंध्यारा छा गया तब शावल उस मार्ग से उतरने के लिये तैयार हुआ सो टोकरी में बैठने से पहिले उस ने शिष्यों के संग प्रार्थना की और तब सहल से नीचे उतर पड़ा. नीचे पहुंच कर उस ने इशारा किया कि वे टोकरी को ऊपर खींच लें और उन से जुदा हो कर रेगिस्तान के मार्ग पर चल पड़ा. और दिन निकलते निकलते वह उस स्थान पर जा पहुंचा जहां उस ने जीवते प्रभु का दर्शन पाया था . सो पावल धीरे धीरे यरूशलीम की ओर बढ़ा.

जब यरूशलीम में पहुंचा तब वह शिष्यों से मिल जाने चाहता था वे सब उस से डरते थे परन्तु प्रभु का एक चेला जिस का नाम बर्णबा था उसे लेकर प्रेरितों के पास लाया और उन से कह दिया कि उस ने क्योंकर मार्ग में प्रभु जी को देखा और कि प्रभु जी उस से बोले और कि क्योंकर उस ने दिमिश्क में यीशु के नाम से खोल के बातें कीं. तब उन्हों ने उसे ग्रहण किया और प्रभु जी के नाम से खोल के बातें करने लगा. यहां भी लोग उस के बैरी हो गये और उसे मार डालने का यत्न किया परन्तु भाइयों ने उसे उस की जन्म भूमि की ओर भेज दिया.



सो सारे यहूदिया और गालील और शोमिरोन में मंडली को चैन हो गया और वह सुधरती जाती और प्रभु के भय में और पवित्रात्मा की शान्ति में चलती और बढ़ती जाती थी.

—:०:—

४.

लुस्त्रानगर में महात्मा पावल के आगे फूल और बलिदान चढ़ाने की कोशिश करना.

पिछली कथा के पीछे शावल अपने जन्म स्थान तरसुस को चला गया था और कुछ समय लों अपने ही देश में अपने प्रभु की साक्षी देने में लगा रहा. इस बीच मंडली में बड़ी तरक्की हुई और बर्णबा यह जान कर कि ऐसे समय में शावल जैसे मनुष्य की बड़ी आवश्यक्ता है उसे ढूंढने के लिये तरसुस को गया और उसे अपने साथ ले कर अन्ताकिया नगर में आ गया.

उस समय अन्ताकिया नगर रोम नगर की बराबरी कर रहा था और प्रभु के शिष्यों की गिन्ती भी इस नगर में कुछ कम न थी बरन दिन प्रति दिन बढ़ती जाती थी. शावल और बर्णबा इस नगर में सेवा करते रहे. नगर के सारे निवासी इन की सेवा से अचंभित हो गये और उसी नगर में प्रभु के शिष्यों को पहिले ख्रीष्टियान अर्थात मसीही नाम मिला. इस बीच यरूशलीम नगर में इस का समाचार पहुंचा और वहां से कई उपदेशक देख भाल तथा सहायता देने के लिये भेजे गये और इस नगर के मसीहियों ने

यरूशलीम नगर की मंडली की सेवा में अपनी अपनी सम्पत्ति के अनुसार सहायता भेजने का प्रबन्ध किया और यह उचित जाना कि बर्णबा और शावल ही उसे ले कर जावें.

जब बर्णबा और शावल दोनों लौट कर अन्ताकिया आ गये तो एक दिन पवित्रात्मा के बताने पर मंडली ने इन दोनों जनों को दूर दूर देशों में सुसमाचार प्रचार करने के निमित्त अलग करना चाहा और उपवास और प्रार्थना करके उन्हों ने उन पर हाथ रख के उन्हें बिदा किया.

सो पवित्रात्मा के भेजे हुए यह दोनों जन नगर नगर खुशकी और तरी की यात्रा करते हुए सुसमाचार प्रचार करते और रोगियों को चंगा करते हुए दूर दूर देशों में जा पहुंचे. इस यात्रा में प्रगट हो गया कि शावल अगुवा होने योग्य है और कि वह आगे को पावल नाम से सेवकाई करेगा. सो महात्मा पावल और उस के संगी प्रचार करते हुए पिसिदाया देश के अन्ताकिया नगर में पहुंचे और वहां से आगे बढ़के इकोनिया में आये. यहां यहूदियों के सिखाने पर लोगों ने प्रभु के सेवकों पर पत्थरवाह करना चाहा सो वे वहां से निकल कर लुस्त्रा और दर्बी नगर में आये.

लुस्त्रा नगर के द्वार पर जूपितर देवता का सुन्दर मन्दिर बना हुआ था जिस में श्वेत वस्त्र पहिने हुए प्रोहित देवता के आगे बैलों को बलि चढ़ाते थे. उस नगर में यह बात चली हुई थी कि किसी दिन जूपितर अपने सेवक हर्मी के संग नगर देखने आवेगा.

महात्मा पावल श्रौर बर्णबा नगर के इसी द्वार से भीतर गये श्रौर कुछ समय लों वहां ठहरे. एक दिन की कथा है कि महात्मा पावल श्रौर बर्णबा खुले मैदान में उपदेश कर रहे थे. नगर के अनगिनित लोग उनका उपदेश सुनने को इकट्ठे हो गये. उस झुण्ड में एक मनुष्य पावों का निर्बल बैठा था जो अपनी माता के गर्भ ही से लंगड़ा था श्रौर कभी चला न था.

यह लंगड़ा मनुष्य बड़े ध्यान से पावल की बातें सुन रहा था सो महात्मा पावल ने जब उस की श्रोर ताका तो यह पाया कि इस मनुष्य में चंगा किये जाने का बिश्वास है. सो पावल ने उपदेश करना छोड़ कर उस लंगड़े मनुष्य से बड़े शब्द से कहा अपने पावों पर सीधा खड़ा हो।

पावल के मुंह से यह शब्द निकला ही था कि सब लोग उस लंगड़े की श्रोर देखने लगे. वे उसे भली भांति जानते थे क्योंकि वह उनके बीच में का ही था. सो वह लंगड़ा कूदने श्रौर फिरने लगा. लंगड़े का कूदना था कि लोग अपने देश की भाषा में चिल्ला कर बोले देवगण मनुष्यों के समान हो के हमारे पास उतर आये हैं सो उन्हों ने गम्भीर स्वभाव बर्णबा को जूपितर श्रौर बक्ता पावल को हर्मी कहा.

बर्णबा श्रौर पावल उन की बोली न समझते थे वे अब लों यही समझे कि उस लंगड़े के चंगा किये जाने पर ये लोग अपना आनन्द प्रगट कर रहे हैं. परन्तु जब उन्हों ने देखा कि जूपितर के मन्दिर का प्रोहित बैलों को श्रौर फूलों के हारों को लाके फाटक

पर बलिदान किया चाहता है तब तो वे समझ गये कि उन्हों ने हमें देवता समझा है. तब तो उन से रहा न गया उन्हों ने अपने कपड़े उतार फेंके और लोगों की ओर लपक के बोले. हे मनुष्यो यह क्या करते हो. हम भी तुम्हारे समान दुःख सुख भोगी मनुष्य हैं और तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं कि तुम इन व्यर्थ विषयों से जीवते ईश्वर की ओर फिरो जिस ने स्वर्ग औ पृथिवी औ समुद्र और सब जो उन में है बनाया.

फिर यह भी बोले कि उस ने बीती हुई पीढ़ियों में सब देशों को लोगों को अपने अपने मार्ग में चलने दिया तौ भी उस ने अपने को बिना साक्षी नहीं रख छोड़ा है कि वह भलाई किया करता और आकाश से बर्षा और फलवन्त ऋतु देके हमारे मन को भोजन और आनन्द से तृप्त किया करता है .

यह कहने से उन्हों ने लोगों को कठिनता से रोका कि उन के आगे बलिदान न करें ।

कुछ दिन पीछे यहूदियों ने अन्ताकिया (पिसीदिया देश के) और इकोनिया से आके लोगों को मनाया और उन के बिरुद्ध कर दिया. सो दूसरे दिन जब पावल नगर में उपदेश करने जाता था तो इन दुष्टों में से किसी एक ने कहा यह है पत्थरवाह कर दो. इतने सब लोग इधर उधर से आ मिले और पत्थरवाह कर के उसे घसीट कर ले गये और यह जान कर कि वह मर गया है उसे नगर के बाहर फेंक आये.

जब शिष्यों को पावल के पत्थरवाह किये जाने का समाचार



पहुंचा तो ये दौड़ कर उसे देखने गये सो जब पावल ने जाना कि उस के मित्र आये हैं तो उस ने उठके नगर में प्रवेश किया और दूसरे दिन बर्णबा के संग दर्बी को चल दिया .

५.

महात्मा पावल का फिलिपी नगर में उपदेश सुनाना.

महात्मा पावल एक उपदेशक और धर्म प्रचारक हो कर नगर नगर घूम कर प्रभु की साची देने लगा पिछली कथा के दृश्य के बहुत महीनों के पीछे पावल भ्रमण करता हुआ दूर पश्चिम की ओर जा पहुँचा और आत्मा की अगुवाई से बिथुनिया देश को जाने की चेष्टा छोड़ कर त्रोआ नगर में पहुंचा. यह नगर समुद्र के तट पर एक उत्तम बन्दरगाह है समुद्र के पार यूरोप का महा द्वीप है .

रात को जब महात्मा पावल सोया हुआ था तो उस ने एक दर्शन देखा कि कोई माकिदोनी पुरुष खड़ा हुआ बिन्ती करके कहता है कि उस पार माकिदोनिया देश जाके हमारा उपकार कीजियं. इस दर्शन से पहिले महात्मा पावल की भेंट लूक नाम एक वैद्य से हो गई थी जो इस समय प्रभु जी का चेला हो कर पावल के संग पार जाना चाहता था. सो जब पावल ने दर्शन पाया तो उसे निश्चय हो गया कि परमेश्वर की यही इच्छा है कि वह समुद्र पार कर यूरोप देश में भी सुसमाचार प्रचार करे .

दूसरे दिन पावल ने अपने संगियों को कहा कि क्योंकर पर-

मेश्वर ने दर्शन दे कर पार जा कर उपदेश करने को कहा है. सो वे सब एकमत हो बन्दरगाह पर गये और जहाज में बैठ कर चल पड़े दूसरे दिन जहाज नियापलि नगर में पहुंचा. वहां जहाज से उतर वे फिलिपी नगर में पहुंचे जो माकिदोनिया के उस अंश का पहिला नगर है और रोमियों की बस्ती है. पावल और उस के साथी उस नगर में कुछ दिन रहे .

बिश्राम के दिन वे नगर के बाहर नदी के तीर पर गये जहां प्रार्थना की जाती थी. इस नगर में बहुत यहूदी न थे सो सम्भव है कि यहां कोई सभा का घर न हुआ होगा इसलिये लोग नदी के तीर पर प्रार्थना करने इकट्ठा होते थे .

महात्मा पावल के साथ इस समय सीलास, लूक और तिमोथी नाम एक युवक था. वे सब प्रार्थना के स्थान पर आये. वहां उन्हों ने कुछ स्त्रियों को इकट्ठी पाया और उन्हीं से बातें करने लगे. उन स्त्रियों में थुआतीरा नगर की एक स्त्री थी जिस का नाम लुदिया था. वह बैजनी वस्त्र बेचा करती थी. यह बैजनी वस्त्र बड़े मोल का होता था और रोमी लोग उस की बड़ी क़दर करते थे. लुदिया परमेश्वर की उपासना करनेहारी थी सो जब उस ने महात्मा पावल के मुंह से ईश्वर के बड़े प्रेम और जगत गुरू यीशु मसीह जी की कथा सुनी तो उस का मन खुल गया कि वह पावल की बातों पर चित्त लगावे .

जब लुदिया सारी कथा सुन चुकी तब उसे बिश्वास हुआ कि जो कुछ वह कहता है सब सत्य है. सत्य के सूर्य का प्रकाश उस के मन में होने लगा सो उस ने अपने घराने समेत प्रभु यीशु मसीह जी

के नाम पर बपतिस्मा ले लिया. और पावल और उस के साथियों से बिन्ती कर कहने लगी कि यदि तुम मुझे प्रभु की बिश्वासिनी जानते हो तो जब लों इस नगर में रहते हो मेरे ही घर पर टिको सो वे उस के घर जा टिके .

एक दिन जब वे फिर प्रार्थना करने को जाते थे तो उन्हें एक छोकरी मिली. लोग समझते थे कि यह छोकरी होनेवाली बात बता देती है. इसलिये जब लोग उस से प्रश्न करते थे तो उसे कुछ देते थे जिस से वह बहुत कमा लेती थी. सो जब उस ने प्रभु के भक्तों को देखा तो पुकारने लगी कि ये मनुष्य सर्व प्रधान ईश्वर के दास हैं जो हमें त्राण के मार्ग की कथा सुनाते हैं. लोगों को अचम्भा हुआ परन्तु पावल और उस के साथियों ने कुछ परवाह न की. उस छोकरी ने जब बहुत दिन तक यह किया तो पावल अप्रसन्न हुआ और मुंह फेर कर उस भूत से जो उस छोकरी पर चढ़ा हुआ था कहा मैं तुझे यीशु मसीह जी के नाम से आज्ञा देता हूं कि उस में से निकल आ और वह उसी घड़ी निकल आया .

जब उस छोकरी के स्वामियों ने देखा कि हमारी कमाई की आशा गई तब उन्हों ने पावल और सीला को पकड़के चौक के प्रधानों को सौंप दिया और तब उन्हें अध्यक्षों के पास ला के कहा कि ये मनुष्य जो यहूदी हैं हमारे नगर के लोगों को व्याकुल करते हैं और ऐसी बातें सिखाते हैं जो हम रोमियों को मानना उचित नहीं हैं. अध्यक्षों ने जब यह बातें सुनीं तो बिना पूछ पाछ किये उन्हें बेत मारने की आज्ञा दी और घायल करके बन्दीगृह में डलवा दिया

और कहा कि उन्हें यत्न से रखना सो दारोग़ा उन्हें भीतर की कोठरी में ले गया और वहां उन के पांव काठ में ठोंक दिये.

आधी रात के बीच पावल और सीला उस बन्दीगृह के भीतर ईश्वर का भजन करते थे और बंधुवे सुन रहे थे कि अचांचक एक बड़ा भुईंडोल हुआ कि बन्दीगृह की नेवें हिलीं और तुरन्त सब द्वार खुल गये और सभों के बन्धन खुल पड़े. जब दारोग़ा को ख़बर लगी और देखा कि बन्दीगृह के द्वार खुल गये तो यह सोच कर कि बस सब बंधुवे भाग गये हैं अपने तईं मार डालने के लिये खड्ग खींचा पावल ने खुले द्वार पर दारोग़ा को देख लिया तो बड़े शब्द से पुकार के कहा अपने को कुछ दुख न देना हम सब यहां हैं.

पावल के बचन सुनते ही दारोग़ा के दम में दम आ गया और वह दीपक मांग के भीतर गया और कंपित हो कर पावल और सीला को दंडवत कर और उन्हें बन्दीगृह से बाहर निकाल कर बोला हे भक्तो त्राण पाने को मुझे क्या करना होगा ?

पावल और सीला ने उत्तर दिया कि प्रभु यीशु मसीह जी पर बिश्वास कर तो तू और तेरा घराना त्रान पायेगा. सो उस ने और उस के घर के सब लोगों ने ईश्वर का बचन सुना और इन भक्तों के घावों को धोया और सब ने बपतिस्मा लिया. तब उस दारोग़ा ने उन के आगे भोजन रखा और अपने सारे घराने समेत ईश्वर पर बिश्वास लाने के कारण आनन्द किया.

दूसरे दिन नगर में इन सब बातों की चर्चा फैल गई और



अध्यक्षों ने उन्हें छोड़ दिया तो वे फिर उसी मसीही भक्तिन लूदिया के घर जा भाइयों को उपदेश कर वहां से चल दिये.

—:०:-

६.

महात्मा पावल का यरूशलीम के गढ़ की सीढ़ी पर खड़ा होके उपदेश करना.

बहुत दिन लों पश्चिमी देशों में उपदेश करने के पीछे महात्मा पावल और उस के साथी लौट कर यरूशलीम में पहुंचे. वहां भाइयों ने उन्हें आनन्द से ग्रहण किया.

दूसरे दिन पावल और उस के साथी यरूशलीम की मंडली के प्रधान याकूब के घर गये क्योंकि वहां सब भाई इकट्ठा थे कि जो जो कर्म ईश्वर ने अपने सेवक पावल के द्वारा अन्य देशियों के बीच में किये थे उन का बर्णन सुनें. भूलना न चाहिये कि पावल ने पश्चिम ओर तीन बड़े दौरे किये हैं. यह तीसरी बार पावल यरूशलीम के भक्तों को अपने कामों का बर्णन सुनाने खड़ा हुआ है. सो जब पावल ने एक एक करके सब बातों का बर्णन किया तो सब ने सुन कर प्रभु की स्तुति की.

यरूशलीम की मंडली में पावल के विषय में नाना प्रकार की

बातें चली हुई थीं सो उन के प्रधान याकूब ने चाहा कि महात्मा जी उनका सन्देह दूर कर दें सो उस॰ने पावल से कहा भाई जी आप देखते हैं कि सहस्रों यहूदियों ने हमारे प्रभु यीशु मसीह जी पर बिश्वास किया है और वे व्यवस्था के लिये धुन लगाये हुए हैं सो आप मन्दिर में जाइये अपने साथ इन मनुष्यों को भी ले जाइये जिन्हों ने मन्नत मानी है और व्यवस्थानुसार अपने को शुद्ध कीजिये. जिस्तें प्रगट हो जाय कि आप व्यवस्था के बिरुद्ध नहीं हैं.

महात्मा पावल ने इस सलाह को मान लिया और मन्दिर में जा कर जो कुछ करना उचित था सो किया. सातवें दिन आशिया से आये हुए चंद यहूदियों ने पावल को जब मन्दिर में देखा तो पावल पर यह कह कर हाथ डाला कि यह वही मनुष्य है जो सर्वत्र लोगों को व्यवस्था के बिरुद्ध सिखाता है और अन्यदेशियों को मन्दिर में लाता है. उन्हों ने इस से पहिले त्रोफिम इफिसी को पावल के संग नगर में देखा था और यह समझ कर कि वह उस को मन्दिर में लाया है सब लोगों को उस्काया. सारे नगर में घबराहट हुई और लोग दौड़े और पावल को पकड़ कर मन्दिर के बाहर खींच लाये और तुरन्त द्वार मून्दे गये.

यहूदी पावल को मार डालने पर थे कि इतने में पलटन के सहस्रपति को सन्देश पहुंचा कि नगर में गड़बड़ हो गई है. सो वह तुरन्त सिपाहियों और सूबेदारों को लेके दौड़ा जिन को देखते ही उन्हों ने पावल को मारना छोड़ दिया.

सहस्रपति ने पावल को गिरिफ़्तार करवा लिया और पूछ पाछ करने लगा कि यह कौन है और क्या है. सो भीड़ में से कोई

कुछ पुकारा कोई कुछ. जब कुछ पता न चला तो उस ने आज्ञा दी कि पावल को क़िले में ले चलें. जब वह सीढ़ी पर पहुंचा तो ऐसा हुआ कि भीड़ के दबाने के कारण सिपाहियों ने उसे ऊपर उठा लिया क्योंकि लोग पुकारते और दबाते चले आते थे.

जब पावल क़िले के भीतर पहुंचाये जाने पर था तब उस ने सहस्रपति से कहा अगर आप कुछ कहने की आज्ञा दें तो कहूं. सहस्रपति ने जब उसे यूनानी भाषा में बोलते सुना तो बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि वह उसे वह मिस्री डाकू समझे हुए था जो चार हजार डाकुओं को लेकर लूट पीट करता था. सो पावल ने कहा कि मैं तो किलकिया के प्रसिद्ध नगर तारस का एक यहूदी हूं सो मैं आप से बिन्ती करता हूं कि मुझे लोगों से बात करने दीजिये. जब उस ने आज्ञा दी तब पावल ने सीढ़ी पर खड़ा होके लोगों को हाथ से सैन किया जब वे चुप हुए तब उस ने इब्रीय भाषा में उन से बात की.

पावल ने उपदेश करते हुए बताया कि क्योंकर उस ने महा प्रभु यीशु मसीह जी का दर्शन पाया और उसे आज्ञा मिली कि उन के नाम पर मोक्ष के सन्देश का प्रचार करूं और कि इसी यरूशलीम के मन्दिर में क्योंकर मैं ने प्रार्थना करते हुए दर्शन पाया कि मैं अन्देशियों के पास जाऊं.

जब लोगों ने अन्य देशियों की बात सुनी तब वे चिल्ला कर कहने लगे कि ऐसे मनुष्य को पृथिवी पर से दूर कर कि उस का रहना उचित नहीं है. तब सहस्रपति ने उसे क़िले के भीतर ले जाने की आज्ञा दी और कहा कि कोड़े मार कर जांचो कि लोग क्यों

उस के विरुद्ध पुकारते हैं, सो जब वे उसे बांधते थे कि कोड़े मारें पावल ने उन्हें बताया कि वह रोमी है. जिस से सहस्रपति को बड़ा आश्चर्य हुआ और डर गया.

दूसरे दिन पावल यहूदियों की न्याय सभा में खड़ा किया गया परन्तु जब यहूदियों में आपस में तकरार हो गई तो सहस्रपति फिर से उसे क़िले में ले गया. इस के पीछे वह पावल को उन की सभा में न लाया क्योंकि चंद यहूदी उसे मार्ग ही में मार डालना चाहते थे. सहस्रपति ने पावल को रातों रात कैसरिया भेज दिया और वहां वह दो वर्ष लों क़ैद में रहा.

७.

महात्मा पावल का रोम नगर को जाते हुये. मालटा टापू में जा उतरना और आदर पाना.

सिपाही लोग जैसे उन्हें आज्ञा दी गई थी तैसे पावल को रात ही में अन्तिपात्री नगर में लाये. दूसरे दिन वे क़िले को लौट गये और सवारों को उस के संग जाने दिया. उन्हों ने कैसरिया पहुंच कर अध्यक्ष को चिट्ठी दे कर पावल को उस के आगे खड़ा किया. अध्यक्ष ने पढ़ के पूछा यह कौन प्रदेश का है और जब जाना कि किलकिया का है तब कहा कि जब तेरे मुद्दई आवेंगे तब तेरी सुनूंगा. और उस ने उसे हेरोद के राजभवन में पहरे में रखने की आज्ञा दी.



इस अध्यक्ष का नाम फीलिक्स था. पावल के मुद्दई आये परन्तु उस ने कोई फैसला न किया कहते हैं कि वह लालची मनुष्य था और पावल से कुछ पाने की आशा रखता था और यहूदियों का मन भी रखना चाहता था सो वह पावल को क़ैद में ही छोड़ गया.

फीलिक्स के चले जाने पर फीस्टस उस देश का अध्यक्ष हुआ. यहूदियों ने उस के आगे पावल पर नालिश की सो जब फीस्टस ने पावल से पूछ पाछ की और उसे सरकार का अपराधी न पाया तो चाहा कि यहूदियों के आगे उस का फैसला करे परन्तु पावल ने यरूशलीम जाना न चाहा और कैसर की दोहाई दे कर कहा कि कैसर के बिचार आसन के आगे मेरा बिचार किया जाय. सो फीस्टस ने सलाह करके ठहराया कि वह कैसर के आगे खड़ा किया जाय.

बहुत दिनों के पीछे जब रोम जाने का प्रबंध हो गया तो पावल और कितने और बंधुवे यूलियुस नाम अगस्तुस की पलटन के एक शतपति के हाथ सौंप दिये गये. जहाज किनारे किनारे चलता था सो जब वे क्रीट टापू से आगे निकले तो समुद्र में तूफान उठ गया और जहाज ख़त्रे में आ गया. हर प्रकार का उद्योग किया गया कि जहाज को बचायें परन्तु एक न चली और अन्त में बचने की आशा भी जाती रही. जहाज में पावल के सिवा सब के होश उड़ गये उस ने लोगों से कहा ढाढ़स बांधो क्योंकि तुम में से किसी के प्राण का नाश न होगा केवल जहाज का. क्योंकि ईश्वर जिस का मैं हूं और जिस की सेवा करता हूं उस का एक दूत इसी रात मेरे

निकट खड़ा हुआ और कहा हे पावल मत डर तुझे कैसर के आगे खड़ा होना अवश्य है. सो ढाढ़स बांधो क्योंकि मैं ईश्वर का विश्वास करता हूं कि जैसा मुझ से कहा गया वैसा ही होगा. फिर कुछ समय के पीछे उस ने लोगों से कहा कि भोजन करो जिस से तुम्हारा बचाव होगा क्योंकि तुम में से किसी के सिर से एक बाल न गिरेगा. सो सब ने भोजन किया. भोजन से तृप्त होके उन्हों ने गेहूं को समुद्र में फेंक के जहाज को हलका किया.

जब बिहान हुआ तो उन्हें जान पड़ा कि हम किसी भूमि के निकट हैं. परन्तु उसी समय जब जहाज दो समुद्रों के संगम में पड़ा तो टूट गया और सब लोगों को आज्ञा दी कि जो जो पैर सकते हैं निकल चलें सो किसी न किसी वस्तु का सहारा ले कर वे सब तीर पर बच निकले.

जब वे बच गये तो जाना कि यह टापू मालटा है और उन जंगली लोगों ने जो वहां रहते थे इन सब लोगों से प्रेम किया और आग सुलगा दी जब पावल ने बहुत सी लकड़ी बटोर के आग पर रखीं तब एक सांप ने आंच से निकल कर उस का हाथ घेर लिया. और जब उन जंगलियों ने सांप को उस के हाथ में लटकते हुए देखा तब आपस में कहा निश्चय यह मनुष्य हत्यारा है जिसे यद्यपि समुद्र से बच गया तौभी दंडदायक जीता रहने नहीं देता. तब पावल ने सांप को आग में झटक दिया और कुछ दुःख न पाया. पर वे देखते रहे कि उस का हाथ सूज जायगा और वह अचांचक मर के गिर पड़ेगा पर जब बड़ी बेर लों देखा कि उस का कुछ नहीं बिगड़ा तो और ही बिचार कर कहा कि यह तो कोई

देवता है. उस स्थान के प्रधान पवलियुस ने तीन दिन लों प्रीतिभाव से उन सब की पहुनाई की. पवलियुस का पिता ज्वर और आंव-लोहू से पीड़ित था पावल ने उस के लिये प्रार्थना की और हाथ रख के उसे चंगा किया. और उस टापू के और रोगियों को भी चंगा किया. सो उन लोगों ने उस का बड़ा आदर किया और जब वे जाने लगे तो जो कुछ आवश्यक था उन्हें दिया.

बहुत दिनों के पीछे पावल रोम नगर में पहुंचा. वहां के भाई लोग उस की ख़बर पाके उस से मिलने आये और पावल को देखके ख़ुश हुए. पावल ने भी उन्हें देख के ईश्वर का धन्य माना और ढाढस बांधा.

पावल दो वर्ष भर रोम नगर में रहा और बिना रोक टोक बड़े साहस से ईश्वर के राज्य की कथा सुनाता और प्रभु यीशु ख्रीष्ट के विषय में सिखाता रहा—

—:o:—

Printed by Apurva Krishna Bose, at The Indian Press, Ltd., Allahabad.

इसी लेखक की कुछ और पुस्तकें

हिन्दी में—

१. बाइबल पढ़ने की साधारण विधि.

२. साधू सुन्दर सिंह जी का जीवन (अनुवाद)

३. संसार में सब से श्रेष्ठ कार्य (अनुवाद)

४. प्रेम-पुष्प. (प्रेम की अपूर्व कथा)

५. प्रार्थना और स्तुति.

६. सचित्र धार्मिक कथाएं

१ भाग—प्रभु योशु मसीह का जीवन.

२—प्रभु योशु मसीह की शिक्षा.

३--प्रभु योशु मसीह के मित्र

४--महात्मा पावल.

७. कैलाश--दर्शन.

रोमन में.

१. हिन्द मसीह के लिये.

२. रोमन—हिन्दी.

३. सेन्ट आगस्टीन.

४. तकमील उल नबूवत.

५. साधू सुन्दर सिंह (अनूवाद)